आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : चौदहवां | अंक : सातवां | नवम्बर-2016

5
दुश्मन मन
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

29
सवाल-जवाब
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

34
धन्य अजायब
मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम

संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा 99 50 55 66 71(राजस्थान), 98 71 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया 96 67 23 33 04 व 99 28 92 53 04

उप संपादक : नन्दनी, **सहयोग :** रेनू सचदेवा व परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 नवम्बर 2016 -176- मूल्य - पाँच रुपये

नहीं लब्भणा, मानस जन्म बहार, मुड़के नहीं लब्भणा, (2)

1. वैदा करके भुल्ल गया चेत्ता, मुश्किल हो गया देणा लेखा, (2)
विसर गया करतार,
मुड़के नहीं लब्भणा .....

2. गुरु चरणां विच प्रीत लगा लै, जमण–मरणां रीत मुका लै, (2)
रैहंदा क्यों फरार,
मुड़के नहीं लब्भणा .....

3. अक्खियाँ खोल के देख नजारा, अंदर बैठा मालिक प्यारा, (2)
उठ के होश संभाल,
मुड़के नहीं लब्भणा .....

4. बीतेया वेला हत्थ ना आवे, 'अजायब' नूं कृपाल सुणावे, (2)
चढ़ बेड़े हो जा पार,
मुड़के नहीं लब्भणा .....

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

दुश्मन मन

गुरु नानकदेव जी की बानी | DVD-23 | मुम्बई

परमात्मा ने सब योनियों से श्रेष्ठ इंसान का जामा दिया है। सभी ऋषियों–मुनियों, सन्त–महात्माओं मालिक के प्यारों ने इस इंसानी जामें को श्रेष्ठ मंडल का उत्तम जीव बयान किया है और वे हमें यह भी बताकर गए हैं कि आपको जिस परमात्मा की तलाश है, उसकी अंश इस शरीर के अंदर रह रही है; वह परमात्मा कहीं बाहर नहीं हमारे शरीर के अंदर है।

अफसोस की बात है कि हम बहुत समय से इस शरीर रूपी मंदिर में रह रहे हैं लेकिन हमने आज तक इस मंदिर के अंदर जाकर परमात्मा की खोज नहीं की। वह कलाकर परमात्मा बिना किसी की मदद से माता के पेट के अंदर अपनी कला दिखा रहा होता है, इस बुत को घड़ रहा होता है कि कहाँ नाक लगाना है, कहाँ मुँह लगाना है, कहाँ आँखें लगानी है, कहाँ साँस की नली लगानी है और किस तरह इसको अंदर खाना देना है।

वह महान कलाकर हमारे जिस्म के अंदर है लेकिन हमने कभी अंदर जाकर उसकी कारीगरी नहीं देखी अगर कोई डॉक्टर यह चाहे कि मैं ऑपरेशन करके इस कलाकार को बीच में से निकाल लूंगा या इस कलाकार को देख लूंगा तो यह कभी नहीं हो सकता। ये सूक्ष्म चीजें हैं इन सबको उस कलाकार ने हमारे शरीर में इस तरह छिपाकर रखा है जिस तरह इजींनियरो ने टेलिविजन सेट में हर चीज को बड़े अच्छे तरीके से फिट किया है।

टेलिविजन में साज बजते हैं आवाज आती है उसमें औरत–मर्द गा रहे हैं अगर हम यह सोचें! इसमें से कोई औरत या मर्द निकालकर उससे घर का कारोबार करवा लेगें चाहे आप टेलिविजन को तोड़ दें लेकिन आपको उसमें से कोई मेटीरियल चीज नहीं मिलेगी जबकि उसमें होता सब कुछ है।

इसी तरह ऋषियों–मुनियों, सन्त–महात्माओं ने इस कीमती हीरे शरीर की खोज की और परमात्मा को अंदर पाया। वे जाते हुए हमें यह संदेश दे गए और धर्मग्रंथों में भी लिख गए अगर आपके दिल में सच्चे परमात्मा से मिलने का शौक, विरह–तड़प है तो आपको परमात्मा बाहर से नहीं, अंदर से ही मिलेगा।

महात्माओं ने बहुत खोज के बाद ग्रंथ–पोथियों में लिख दिया कि वह महान कलाकर परमात्मा आपके शरीर के अंदर है। जिन महात्माओं का मिलाप परमात्मा के साथ हुआ उन्होंने अंदर जो–जो नजारे देखे या उन्हें जो रूकावटें पेश आईं उन्होंने हमारे फायदे के लिए उसे धर्मग्रंथों में लिख दिया; उस महान आत्मा का जिक्र कर दिया जिसकी मदद से उन्होंने वे घाटियां पार की।

अगर आप उन घाटियों को पार करना चाहते हैं, परमात्मा से मिलना चाहते हैं तो आप किसी ऐसे महात्मा से मिलें जिसने अपनी जिंदगी में खोज करके अपनी आत्मा को परमात्मा के साथ मिला लिया हो। वह आपकी सुरत को शब्द के साथ जोड़ सकता है और आपको बता सकता है कि वह महान कलाकर किस तरह हमारे अंदर बैठा है।

इन आँखों से नीचे परमात्मा की खोज नहीं हो सकती परमात्मा नहीं मिल सकता क्योंकि नीचे तो विषय–विकार भरे पड़े हैं। परमात्मा

तीसरे तिल से ऊपर जाकर मिलता है। आपके आगे गुरु नानकदेव जी की बानी रखी जा रही है गौर से सुनें:

आपे करता पुरख बिधाता।। जिन आपे आप उपाय पछाता।।
आपे सतगुर आपे सेवक आपे सृस्ट उपाई हे।।

जो ऋषि–मुनि अपनी खोज में भरपूर हो जाते हैं जिनकी सुरत उस शब्द के साथ जुड़ जाती है उन्हें पत्ते–पत्ते में परमात्मा नजर आता है। उन्हें पता है कि जो कुछ भी हो रहा है वह सब परमात्मा के हुक्म से हो रहा है। यह कह लेना आसान है कि सबके अंदर परमात्मा है लेकिन हम अपने अंदर झाँककर देखें कि हम इसके ऊपर कितना अमल करते हैं।

एक समाज दूसरे समाज को और एक कौम दूसरी कौम को भला–बुरा कह रही है। हर व्यक्ति यह कह रहा है कि मैं ठीक चल रहा हूँ बाकी सारी दुनिया गलत है। हम परमात्मा की भक्ति का दावा करते हैं, परमात्मा से मिलना चाहते हैं। जिनका परमात्मा के साथ प्यार होता है उनका सारी दुनिया के साथ प्यार होता है। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि उनका पशु–पक्षियों के साथ भी प्यार होता है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

मंदा जाने आपको अवर भला संसार।

ऐसे महात्मा दुनिया में एक मिसाल बनकर आते हैं, वे अपने आपको कभी श्रेष्ठ नहीं बताते। महात्मा प्यार लेकर आते हैं और हमारे अंदर प्यार ही पैदा करते हैं। वे कहते हैं कि हम उस परमात्मा–गुरु की दया से पवित्र बने हैं। जिस परमात्मा ने यह शरीर बनाया है हमारी पैदाईश की है वह इस शरीर के अंदर बैठा है। वह आप ही पैदा करता

है और आप ही लय करता है। आप ही सेवक बनकर ध्यान करता है और आप ही गुरु बनकर अपना रास्ता बताने के लिए आता है।

परमात्मा जब हम जीवों का उद्धार करना चाहता है तो अपनी शक्ति किसी इंसान के अंदर रख देता है अगर वह देवी–देवता के रूप में आता तो हम उसे देख न सकते, उससे फायदा न उठा सकते। महाराज जी कहा करते थे कि प्यार हमेशा अपने जैसे के साथ होता है अगर वह गाय, भैंस के चोले में आता तो हम उसकी बोली न समझ सकते। इंसान का टीचर इंसान ही हो सकता है। वह इंसानों में इंसान बनकर आता है लेकिन इंसानों से ऊपर होता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, "जेलखाने में कैदी होते हैं और डॉक्टर भी होते हैं। कैदी सजा भोग रहे होते हैं और डॉक्टर कैदियो के इलाज के लिए आता है लेकिन डॉक्टर आजाद होता है।" इसी तरह सन्त–महात्मा हमारी तरह तन–मन के कैदी नहीं होते वे आजाद पुरुष होते हैं। वे तन में तो उतना समय ही रहते हैं जब तक परमात्मा का हुक्म होता है कि तुमने इन जीवों को समझाकर लाना है नाम के साथ जोड़ना है। कबीर साहब कहते हैं:

तरवर सरवर सन्त जन चौथे बरसे मेह।
पर स्वार्थ के कारणे चारो धारे देह।।

पेड़ हमेशा दुनिया के फायदे के लिए फल पैदा करता है। नदियाँ दुनिया के फायदे के लिए पानी बहाती हैं और बारिश भी दुनिया के फायदे के लिए होती है। इसी तरह सन्त–महात्माओं का अपना कोई मिशन नहीं होता। वे न तो नया मजहब बनाने के लिए आते हैं और न ही किसी का मजहब तोड़ने के लिए आते हैं। उनके दिल में यह

ख्वाहिश नहीं होती कि हमारे ज्यादा सेवक हों। उन्होंने कोई आर्मी नहीं खड़ी करनी होती वे उन प्रेमियों के लिए आते हैं जिनके दिल में परमात्मा से मिलने का शौक है। वे ऐसे प्रेमियों के पास जरूर जाते हैं और उन्हें अपने घर का रास्ता बताते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

जिन तुम भेजे तिने बुलाए सुख सहज सेती घर आओ।

आपको जिस परमात्मा ने इस संसार में भेजा है वह परमात्मा हमारे जरिए आपको बुला रहा है। आपको न अपनी बोली बदलने की जरूरत है और न ही कौम छोड़ने की जरूरत है। आप कोई भी लिबास पहन लें चाहे नीला पहनें चाहे सफेद पहनें इसका सुरत–शब्द के अभ्यास पर कोई असर नहीं पड़ता। बुराई हमारे मन के अंदर है, हमारा **दुश्मन मन** है। हमारे और परमात्मा के बीच मन ही रूकावट है जब हम परमात्मा और मन के बीच की रूकावट को दूर कर लेते हैं तो हमें सारा विश्व अपने घर जैसा नजर आने लग जाता है।

फिर हम यह नहीं कहते कि यह कौम अच्छी है वह कौम बुरी है। हम जब तक कौमों–मजहबों में बैठे हैं तब तक हम परमात्मा से दूर हैं। परमात्मा ने किसी के ऊपर कोई लेबल लगाकर नहीं भेजा कि तू हिन्दु है, तू सिक्ख है या तू ईसाई है। परमात्मा ने कभी यह नहीं कहा कि उसे हिन्दु ही मिल सकते हैं मुसलमानों को धक्के पड़ेंगे या उसे सिक्ख मिल सकते हैं और इसाईयों को धक्के पड़ेंगे।

महात्मा हमें बताते हैं कि वहाँ जाति–पाति कोई नहीं पूछता। यहाँ किसी की जाति–पाति आग में जल जाती है या किसी की मिट्टी में दफनाई जाती है। गुरु साहब कहते हैं:

जात पात पूछे न कोए, हरि को भजे सो हरि का होए।

जाति–पाति को कोई नहीं पूछता। जो परमात्मा को जपता है, परमात्मा को अपने अंदर प्रकट कर लेता है वह परमात्मा को प्यारा है। जैसे माता को पुत्र प्यारे हैं उसी तरह परमात्मा को अपने भक्त प्यारे हैं। ये समाज हमने खुद बनाए है और हम इनकी शरण लेकर परमात्मा से दूर हो गए हैं, हम एक–दूसरे को भला–बुरा कहने में लगे हुए हैं।

सोचकर देखें! अगर किसी धर्मस्थान में थोड़ी बहुत तोड़–फोड़ हो जाए या गलती से किसी दीवार में दरार आ जाए तो हम हजारों की तादाद में परमात्मा के साजे हुए मंदिरों को तोड़ना शुरू कर देते हैं, कत्लोगारत करना शुरू कर देते हैं फिर हम कहते हैं कि हम कौम के रखवाले हैं हम शहीद हो गए हैं अगर किसी का गला काटने से कोई शहीद हो सकता तो इससे सस्ता सौदा और क्या हो सकता है?

सन् 1947 में मैंने अपनी आँखों से वाक्या देखा है और भी बहुत से आदमी हैं जिन्होंने यह वाक्या देखा है। उस समय कितना कत्लोगारत हुआ अगर कत्लोगारत करने से शहीद हो जाते तो सारी दुनिया ही शहीद हो जाती। जो परमात्मा की भक्ति करते हैं उनका परमात्मा की सारी कायनात के साथ प्यार होता है।

हम गुरु नानकदेव जी की बानी पढ़ते हैं आपके सेवक हिन्दु भी थे और मुसलमान भी थे। क्या आप मक्का नहीं गए थे, क्या आप मक्का को बुरा कहते थे? गुरु गोविंद सिंह जी ने भी यही उपदेश दिया कि अगर आप परमात्मा को पाना चाहते हैं तो आप अपने अंदर प्यार पैदा करें। मैं आपको सच्ची बात बताता हूँ:

जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभ पायो।

आज तक जिसने भी परमात्मा को पाया है उसने प्रेम करके ही पाया है। जब हम प्रेम से दूर चले जाते हैं तो हम अलग–अलग फिरके बना लेते हैं। एक–दूसरे के खून के प्यासे होकर बैठ जाते हैं अगर हमारा कोई दुश्मन है तो वह **दुश्मन मन** है जो हमारे अंदर ही बैठा है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

मन ही नाल झगड़ा मन ही नाल सथ।

दुश्मन मन आपको वकील की तरह समझा रहा है, आपको गलत रास्ते पर डाल रहा है आप इस दुश्मन मन के साथ बात करके देखें कि तू गुरु की तरफ लगकर तो देख! जब हम सतसंग में जाते हैं नाम शब्द की कमाई करते हैं तो मन के घर में खलबली मच जाती है मन जानता है कि अब मुझे कैद होना पड़ेगा मेरी आजादी खत्म हो जाएगी।

महात्मा हमें समझाते हैं कि परमात्मा खुद ही गुरु में आता है और खुद ही सेवक बनकर भक्ति करता है। ऐसी हालत तब होती है जब हम मन माया के घेरे से ऊपर चले जाते हैं। गुरु नानक जी कहते हैं:

मंदा किसनू आखिए शब्द देखो लिव लाए।
बुरा भला तिच्चर आखदा जिच्चर है दो माहे।।

हम उतनी देर ही किसी को भला–बुरा कहते हैं जब तक हम परमात्मा से दूर हैं लेकिन जब हम परमात्मा से मिल जाते हैं फिर पता लगता है कि आत्मा सबके अंदर है और परमात्मा भी सबके अंदर है। सन्त–महात्माओं की नजर किसी समाज के ऊपर नहीं बल्कि आत्मा के ऊपर होती है। आत्मा निर्दोष है, बुराई तो मन के अंदर है। सन्त–महात्मा हर एक को आत्मा समझकर प्यार करते हैं।

आपे नेड़े नाहीं दूरे।। बूझेंह् गुरमुख से जन पूरे।।
तिन की संगत अहनिस लाहा गुर संगत एह वडाई हे।।

आप प्यार से कहते हैं जिनके ऊपर परमात्मा दयाल हो जाता है दया करके उन्हें अपने पास ले आता है कि मैं आपके शरीर में बैठा हूँ। जिनके ऊपर उसकी दया नहीं होती वे बाहरमुखी हो जाते हैं कर्मकांड में उलझ जाते हैं। कर्मकांड के बारे में गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

पिर परदेस श्रृंगार बनाए, मनमुख अंध ऐसे कर्म कमाए।
हलत न शोभा पलत न ढ़ोई, ऐहला जन्म गँवावणेया।।

जिस तरह किसी औरत का पति अमेरिका या इंगलैंड चला गया हो अगर वह औरत हार–श्रृंगार लगाए तो समाज उसकी निन्दा करता है कि इस औरत का चाल–चलन ठीक नहीं। जब इसका पति बाहर गया है तो यह श्रृंगार लगाकर किसे दिखाती है? इसी तरह जिसका परमात्मा पास नहीं उसका कर्म भी उस औरत जैसा है। कर्मकांड परमात्मा को पाने का तरीका नहीं।

हम मनमुख, मुग्ध गँवार हैं। हम उस औरत की तरह श्रृंगार कर रहे हैं जिसे परमात्मा कुबूल नहीं करता। न दुनिया में उसकी शोभा है न आगे परमात्मा उसे जगह देता है। हम जो भी समय कर्मकांड में लगाते हैं वह बेकार चला जाता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

पानी मथे हाथ कुछ नाहीं, खीर मथन आलस भारा।

कर्मकांड इस तरह है जैसे हम गिरी का कोई मोल न समझें और छिलके के साथ प्यार करें। हम बाहर जितना भी कर्मकांड करते हैं वह इस तरह हैं जैसे हम पानी में मधानी डालें तो उसमें से मक्खन नहीं निकलेगा ज्यादा से ज्यादा झाग आ जाएगी। मक्खन जब भी निकलेगा दूध में से निकलेगा। सुरत शब्द के अभ्यास को दूध कहा गया है और नाम को मक्खन कहा गया है। जब हम सुरत शब्द का अभ्यास करते

हैं तो उसमें से खालिस मक्खन निकल आएगा और हमारे अंदर नाम शब्द प्रकट हो जाएगा। कबीर साहब कहते हैं:

बाहर क्या दिखाईए भीतर जपिए नाम।

आप बाहर क्या दिखाते हैं? आप उस मालिक को अपना आप दिखाएं क्योंकि वह आपके अंदर बैठा है। भीखा साहब कहते हैं:

भीखा भूखा को नहीं, सबकी गठरी लाल।
गिरह खोल न जानी, ताँते भए कंगाल।।

परमात्मा सबके अंदर बैठा है। हमारी रूह और मन की गाँठ लगी हुई है लेकिन हम उस गाँठ को खोल नहीं सकते। परमात्मा ने हमारे अंदर जो हीरा रखा है हम उसे पा नहीं सकते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, "अगर किसी के घर में करोड़ो रूपया दबा हुआ हो लेकिन वह बेचारा बाहर भीख माँगता फिरे तो वह उस धन से क्या फायदा उठा सकता है? अगर उसे उसके घर का कोई भेदी मिल जाए जो यह बताए कि तेरे घर में बहुत पैसा दबा हुआ है, मैं तुझे बताता हूँ कि तू इस जगह पर धरती खोद। वह उस जगह धरती खोदकर वहाँ से धन निकालकर अच्छे मकान बनाकर जिंदगी बसर कर सकता है। अब आप सोचकर देखें! वह धन का शुक्राना करे या धन के बारे में बताने वाले का शुक्राना करे? हम खुद ही कहेंगे कि धन तो पहले भी उसके घर में था लेकिन वह भूखा मरता था। वह उसका शुक्रगुजार होगा जिसने उसे धन के बारे में बताया।"

इसी तरह हम युगों–युगों से परमात्मा से बिछुड़े हुए हैं। परमात्मा हम सबके अंदर हैं लेकिन उसके होते हुए हम कभी कुत्ता, कभी कीड़ा, कभी पेड़ तो कभी और बुरी योनियों में जाते हैं। हम किस तरह

विषय–विकारों से परेशान हैं। जब हमें महात्मा मिलते हैं तो वे कहते हैं, "आओ भई! हम आपको परमात्मा से मिलवा देते हैं।" इसलिए हम गुरु का धन्यवाद करते हैं और अपने आपको गुरु पर वार देते हैं क्योंकि गुरु ने हमें युगों–युगों से बिछड़े हुए परमात्मा से मिलवा दिया।

सन्त–महात्माओं ने हमारे अंदर कुछ रगड़कर या घोलकर नहीं डालना। जो बच्चे स्कूल जाते हैं टीचर उनके अंदर कुछ रगड़कर या घोलकर नहीं डालते। विद्या की ताकत बच्चे के अंदर होती है टीचर बच्चे की सोई हुई विद्या जगा देते हैं। जो बच्चे टीचर पर भरोसा करते हैं टीचर की बात मानते हैं टीचर उन बच्चों की तरफ ज्यादा तवज्जो देते हैं; वे बच्चे अच्छे ओहदो पर जाकर अच्छी जिंदगी बसर करते हैं।

सन्त–महात्मा हमें 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ते हैं इसलिए हम उनका धन्यवाद करते हैं क्योंकि उन्होंने हमें हमारे परमात्मा के साथ मिलवा दिया और हमारी आत्मा पर रहम करके उसे ठंडक पहुँचा दी। परमात्मा जिन पर दयालु होता है उनको शरीर में ही दिखा देता है कि मैं यहाँ बैठा हूँ, उन्हें गुरु से मिलवा देता है। गुरु तवज्जो देकर उन्हें अंदर ले जाते हैं। जिनका अभी समय नहीं आया वे बाहरमुखी होकर कर्मकांड में उलझे फिरते हैं।

तिन की संगत अहनिस लाहा गुर संगत एह वडाई हे।।

अगर हमें कमाई वाले सन्त–महात्मा की संगत मिल जाती है तो हमारा फायदा ही फायदा है। हर महात्मा ने साध–संगत की बहुत महिमा गाई है कि हमें भूलकर भी संगत नहीं छोड़नी चाहिए।

महाराज कृपाल कहा करते थे, "सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजार काम छोड़कर भजन–अभ्यास में बैठे। हमारी आत्मा को

खुराक की उतनी ही जरूरत है जितनी हमारे जिस्म को जरूरत है। आत्मा जन्मों–जन्मों से भूखी विलाप कर रही है। आत्मा की खुराक शब्द–नाम की कमाई है।" हमें मालिक के प्यारों की संगत मिल जाए तो लाहा ही लाहा है। कबीर साहब कहते हैं:

कबीरा संगत साध की जो कीन्ही सो पक्की।

जुग जुग संत भले प्रभ तेरे।। हर गुण गावह् रसन रसेरे।।

जो समाज यह कहते हैं कि अब कोई सन्त या गुरु पीर हो ही नहीं सकता, उनकी यह सोच गलत है। जो बच्चा आज से दो सौ साल पहले या दो युग पहले पैदा हुआ उसे माता–पिता की और माता के दूध की जितनी जरूरत थी उतनी ही आज पैदा हुए बच्चे को है। अगर हम यह कहें कि आज परमात्मा को सन्त–महात्मा भेजने की जरूरत नहीं तो हमारी यह सोच गलत है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

जिसका गृह तिस दिया ताला कुंजी गुरु सौंपाई।
अनिक उपाव करे नहीं पाए बिन सतगुरु शरनाई।।

जिस परमात्मा ने इस देह की सर्जना की है उसने खुद ही ताला लगाया हुआ है। यह ताला किसी इंसान का या किसी गुरु का लगाया हुआ नहीं यह परमात्मा का लगाया हुआ है और परमात्मा ने इसकी चाबी गुरुमुखों के हवाले की हुई है। परमात्मा अपने मिलने का जो चाहे तरीका रख सकता है क्योंकि वह कुलमालिक है।

हम मन बुद्धि से चाहे जितने उपाय कर लें जब तक हम गुरु के चरणों में सिर नहीं झुकाते अंदर जाने का साधन और तरीका नहीं लेते तब तक हम अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकते। मालिक के प्यारे हमेशा संसार में आते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

अग्नि लगी आकाश को झड़-झड़ पैंण अंगियार।
सन्त न होते जगत में तो जल मरता संसार।।

मालिक के प्यारे हमेशा ही अलग–अलग फिरको में बँटे हुओ को इकट्ठा करके बिठाते हैं। कोई अपने आपको किसी कौम का समझता है तो कोई अपने आपको किसी मुल्क का समझता है। सन्त हमें बताते हैं कि परमात्मा ने तो इंसान बनाया है। हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई हम बाद में बने है। हमें पहले इंसान ही बनना है। परमात्मा ने किसी पर कोई लेबल लगाकर नहीं भेजा।

हम सबका परमात्मा एक है, हम सब परमात्मा के बच्चे हैं। महात्मा हमें परमात्मा के प्यार का संदेश देते हैं। सतसंग में हर कौम हर मजहब का आदमी आकर बैठता है। परमात्मा किसी की पर्सनल जायदाद नहीं। जो परमात्मा की भक्ति करता है परमात्मा उसी का हो जाता है और उसे अपने चरणों में जगह देता है।

परमात्मा एक समुंद्र है, सतगुरु उसकी लहर है और आत्मा उसकी बूँद है। बूँद भी पानी है लहर भी पानी है और समुंद्र तो खुद पानी ही है लेकिन फर्क बिछोड़े का होता है। जो लहरे समुंद्र से उठती हैं आखिर वे लहरे समुंद्र में जाकर जज्ब हो जाती हैं। सन्त–सतगुरु परमात्मा के समुंद्र की लहरे होती हैं, जब तक परमात्मा का हुक्म होता है वे शब्द–नाम का प्रचार करके आखिर परमात्मा में जाकर समा जाते हैं। हमें पता ही है अगर हम कोई चीज लहर के हवाले कर दें तो लहर उस चीज को समुंद्र के अंदर ही लेकर बैठ जाती है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, “अगर आपसे भजन–सिमरन नहीं होता तो कम से कम आप सन्त–महात्मा मालिक के प्यारो

के साथ प्यार ही कर लें क्योंकि जिस तरफ हमारा प्यार होगा आखिर हम उसी तरफ चले जाएंगे। तराजू का जो पलड़ा भारी होता है उसका झुकाव उसी तरफ होता है। हमारा दुनिया के साथ प्यार है तो आँखों के आगे दुनिया आएगी अगर सन्तों के साथ प्यार है तो सन्त हमें लेने के लिए आ जाएंगे।" सन्त हमेशा संसार में आते हैं उनके बिना संसार कभी खाली नहीं हो सकता। सन्तों की संगत से लाभ ही लाभ है।

उसतति करेंह् परहर दुख दालद जिन नाहीं चिंत पराई हे।।
ओय जागत रहैं न सूते दीसेंह्।। संगत कुल तारे साच परीसेंह्।।

सन्त–महात्मा दुनिया की तरफ से सोए होते हैं और परमात्मा की तरफ से जागे होते हैं। वे हमारे अंदर भी यही जज्बा भरते हैं कि आप कमाई करें परमात्मा की तरफ से जागें और दुनिया की तरफ से सो जाएं। वे बड़ी हमदर्दी लेकर इस संसार मंडल में आते हैं। जिन सन्तों ने हमें नाम दिया होता है उनके अंदर हमारे लिए सच्ची हमदर्दी और सच्चा प्यार होता है।

जब हम परमात्मा की भक्ति करते हैं अपने फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए आँखो के पीछे लाकर तीसरे तिल पर एकाग्र कर लेते हैं यह हमारे घर का दरवाजा है। यहाँ से हमारा सफर शुरू होता है। जब हम घर के दरवाजे पर पहुँच जाते हैं फिर हम संसार की तरफ से सोना और परमात्मा की तरफ से जागना शुरू कर देते हैं।

जो लोग परमात्मा की भक्ति में लग जाते हैं दुनियादार लोग उनकी निन्दा करते हैं। माता–पिता कहते हैं कि अब तू भक्ति में लग गया है। औरत कहती है कि तू भक्ति में लग गया है। अगर कोई औरत भक्ति करती है तो मर्द कहता है तू भक्ति करने लग गई है तुझे

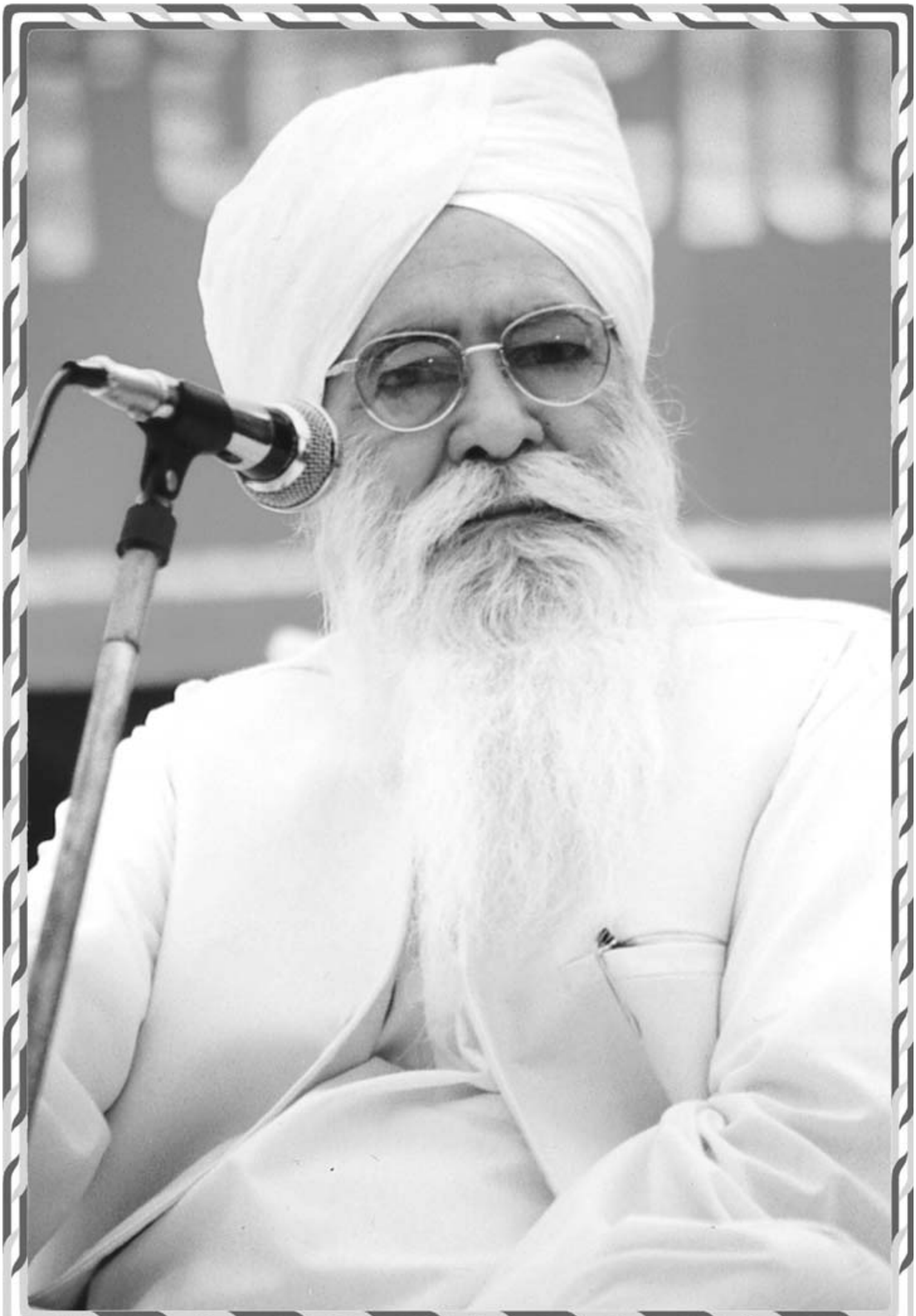

बच्चों की फिक्र नहीं लेकिन यह उसके अपने बस की बात नहीं होती। जो अपने घर की तरफ से जाग गया है उसे आप जितना मर्जी समझा लें वह अब उस तरफ से जागा ही रहेगा। जो आप तर जाते हैं वे संगत को भी तार लेते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, "सतसंगी की कई कुलें तर जाती हैं। गुरमुख की सौ कुलें तर जाती हैं। गुरुमुख संगत की अनेकों कुलों को तार देते हैं; यह नाम की कमाई का ही प्रताप है।"

कलमल मैल नाहीं ते निरमल ओय रहैं भगत लिव लाई हे।।

मालिक के प्यारे निर्मल और पवित्र होते हैं। वे दुनिया में रहते हुए दुनिया की मैलों से फँसे हुए नहीं होते। उनका खून बहुत पवित्र होता है अगर वे किसी कोढ़ी को हाथ लगा दें तो कोढ़ी का कोढ़ दूर हो जाता है। आप पवित्र चीज को किसी के साथ छुआकर देखें वह हमेशा के लिए ठीक हो जाएगी। हमारा जातिय तजुर्बा है कि जिन लोगों को ऐसी बहुत सी बिमारियां होती हैं वे जब पवित्र आत्मा के नजदीक आते हैं तो वे ठीक हो जाते हैं, यह कोई करामात नहीं होती। सन्तों के जाने के बाद दुनिया महात्माओं की बड़ाई को बढ़ा–चढ़ाकर लिख देती है।

आप प्यार से कहते हैं कि वे निर्मल और पवित्र होते हैं, हमारे अंदर शब्द–नाम का शौक पैदा करके हमें भी पवित्र कर देते हैं। हम जब तक विषय–विकारों में फँसे हुए हैं तब तक चाहे हम जितना मर्जी जिस्म को धो लें, चाहे इसे जितना मर्जी धूप दे लें हम कभी भी पवित्र नहीं हो सकते। गुरु नानक साहब कहते हैं:

जन्म जन्म की इस मन को मल लगी काला होया सुआओ।
धोती खनली न उज्जल होय चाहे सौ धोवन पाओ।।

इसे चाहे आप जितना मर्जी धो लें इसे जन्मों–जन्मों की मैल लगी हुई है। कोल्हु के अंदर से तेल निकालते हैं वहाँ पर एक कपड़ा होता है जिसे खनली कहते हैं। उसके अंदर इतना तेल जज्ब हो जाता है कि उस कपड़े को चाहे जितना भी साबुन लगा लें वह कभी साफ नहीं होता। हमारे मन की भी यही हालत है। सन्त–सतगुरु धोबी बनकर इस मंडल पर आत्मा की सफाई के लिए आते हैं। उन्हें पता है कि पापों के नीचे दबी हुई शुद्ध आत्मा भी है।

जिस तरह धोबी को अपने कर्त्तव्य पर भरोसा होता है कि मैं इस कपड़े में से सफेदी निकाल लूंगा उसी तरह सन्तों को भी अपने नाम–शब्द पर भरोसा होता है कि जब हम इसके अंदर नाम–शब्द रखेंगे तो इसकी आत्मा साफ हो जाएगी, भक्ति करने लगेगी।

बूझो हर जन सतगुर बाणी।। एह जोबन साँस है देह पुराणी।।

मुसलमान उस ताकत को कलमा या बाँगे आसमानी कहते हैं। किसी महात्मा ने उसे दिव्य धुनि कहकर बयान किया है और किसी महात्मा ने उसे अंदर का राग कहकर बयान किया है। गुरु नानकदेव जी उसे रब्बी बाणी या धुर की बाणी कहकर बयान करते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हम सबके अंदर परमात्मा ने प्रकाश ज्योत रखी है। यह बानी दिन–रात धुनकारे दे रही है:

धुर की बाणी आई जिन सगली चिन्त मिटाई।

यह बानी धुर दरगाह सच्चखंड से उठती है और हमारे माथे के पीछे धुनकारे दे रही है। यहाँ न कौम का सवाल है न मजहब का सवाल है। जो खुशकिस्मत अपने फैले हुए ख्याल को नौं द्वारों में से निकालकर आँखों के पीछे लाएगा वह इस बानी के साथ जुड़ जाएगा।

उसे पता है कि गुरु की बताई हुई बानी सच्ची है पक्की है; बाकी जितनी भी बानियां हैं वे उसकी महिमा बयान करती हैं और उसके मिलने के फायदे बताती हैं।

हमारी पलटन कुछ समय के लिए डेरा ब्यास के पास रूकी हुई थी। हमारी आर्मी ने महाराज सावन सिंह जी को अखंड पाठ के लिए बुलवाया। महाराज सावन सिंह जी थोड़ा सा ही बोले लेकिन हममें से बहुत सारे इंसानों की जिंदगी ही पलट गई क्योंकि हम बानी को पढ़ना जानते थे समझते नहीं थे। महाराज जी ने कहा, "देखो भई! मैं आपको प्यार से बताता हूँ कि यह बानी किसी और बानी का ज्ञान भी करवाती है, यह बानी आप सबके अंदर समाई हुई है।"

पूरे गुरु की बानी सब माहे समानी, आप सुणी ते आप बखानी।

सन्त–सतगुरु इस बानी को खुद सुनते हैं और हमें भी इस बानी को सुनने के लिए उपदेश देते हैं। इस बानी की चाबी सन्त–महात्माओं के हाथ में रखी हुई है। यह देह क्षण भंगुर है। पता नही कब आवाज आ जानी है किसी बीमारी ने नाकारा कर देना है या मौत ने इसे खत्म कर देना है? हमारा फर्ज बनता है कि जो बानी सच्चखंड से आ रही है हम उस बानी को समझें उसे पकड़कर अपने घर चलें।

आज काल मर जाईऐ प्राणी हर जप जप रिदै ध्याई हे।।
छोड़ो प्राणी कूड़ कबाड़ा।। कूड़ मारे काल उछाहाड़ा।।

अब आप कहते हैं कि आप बुराईयां करना छोड़ दें। हम काल के राज्य में रह रहे हैं काल आपको माफ नहीं करेगा। कभी दिल में ख्याल हो चोर, लुटेरों को पुलिस वाले माफ कर देंगे ऐसा नहीं हो सकता। जब तक चोर पुलिस से दूर है वह अपने आपको माफ

समझता है आखिर कहाँ जाएगा? समय आने पर चोर जरूर पुलिस के हाथ में आ जाएगा। हमारी यही हालत है कि हम संसार में बुराईयां करते हैं कत्लोगारत करते हैं तो काल भी माफ नहीं करता, वह हमें सजा दे देता है। कबीर साहब कहते हैं:

किए पाप रखे तले दबाऐ प्रगट भए नादान जब पूछे धर्मराय।

हम कह जरूर देते हैं किसी को क्या पता है चाहे हम जो मर्जी करें। महात्मा हमें बताते हैं कि हम दुनिया से नजर छिपा सकते हैं अपने आपसे भी छिपा सकते हैं लेकिन जो आपके अंदर बैठा है उसे किसी गवाही की जरूरत नहीं वह सब कुछ देख रहा है, वह साँस–साँस का हिसाब रखता है। अगर हम बुरे कर्म करेंगे तो काल माफ नहीं करेगा और हमें नर्कों में डाल देगा।

साकत कूड़ पचेंह् मन हौमैं दुह मारग पचै पचाई हे।।

साकत उनको कहा गया है जो परमात्मा की भक्ति नहीं करते उनका हृदय काले कम्बल जैसा है। कबीर साहब कहते हैं कि आप काले कम्बल को जितना मर्जी साबुन से साफ कर लें वह सफेद नहीं होता। इसी तरह साकत पुरुष में हौमें अहंकार है कि मेरे जैसा कौन है? वह अपनी मौत को और अपने बनाने वाले को भी भूल जाता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, “जो लोग जप–तप, पूजा–पाठ करके अहंकार करते हैं वह इस तरह हैं जैसे अच्छा पुलाव बनाकर उस पर राख की धूड़ी डाल दें।” कबीर साहब और गुरु नानकदेव जी भी यही कहते हैं:

तीर्थ व्रत और दान कर मन में धरे गुमान।
नानक नेह फल जात है ज्यों कुंचर स्नान।।

अगर हम भूल से दस रूपये दान कर दें तो अखबारों में निकलवाते हैं। भाई–पंडितों से अरदास करवाते हैं कि मैंने इतना दान किया है, मैंने इतने लोगों को चावल खिलाए हैं। दिल में ख्याल आता है कि मैं कितना बड़ा दानी हूँ लेकिन विचार करके देखें! उस दान में आपका दस नाखूनों से कितना कमाया हुआ है? बुल्लेशाह कहते हैं:

आरन दियां चोरियां सूई करदे दान।
कोठे चढ़कर देखदे औंदा कदों बवान।।

हम जो पैसे दान करते हैं हम नहीं जानते कि वह पैसा किस ढ़ग से हमारे पास आया है, वह पैसा ठग्गी का है या बईमानी का है? जब मौत आती है हम सोचते हैं कि गुरु आया है? गुरु ने आपसे कोई कर्ज तो नहीं लिया? गुरु सारी जिंदगी आपसे कहता है कि पवित्र बनें अपनी मेहनत से रोटी–रोजी कमाएं परमात्मा बरकत डालेगा।

आप प्यार से समझाते हैं कि दो बेड़ियों वाला हमेशा दुख और तकलीफ सहता है। एक तरफ वह बुरे कर्म कर रहा होता है और दूसरी तरफ अच्छे कर्म कर रहा होता है। अब परमात्मा उसके दान–पुण्य को देखे या उसने जो बुरे तरीके से रोजी रोटी कमाई है उसे देखे? गुरु नानक साहब कहते हैं:

दे दे मंगे सहसा गुणा शोभ करे संसार।

हम एक रूपया दान करके हजार रूपये माँगते हैं और यह भी चाहते हैं कि दुनिया हमारी शोभा करे कि फलाना आदमी तो बड़ा दानी है। सन्त–महात्मा दान–पुण्य को बुरा नहीं कहते। दान करके अपनी कमाई को सफल करें। हमें अपनी कमाई में से दान करना चाहिए। हमें अपनी रोजी–रोटी कमाने के लिए खून पसीने की कमाई करनी चाहिए।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, "अगर दाँए हाथ से दान करें तो बाँए हाथ को भी पता नहीं लगना चाहिए।"

छोड़ो निंदा तात पराई ।। पढ़ पढ़ दझेंह् सांत न आई ।।

अब गुरु साहब कहते हैं कि हमें किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए अगर हम किसी की निन्दा करते हैं तो हमारा ही नुकसान है। हम जिसकी निन्दा करते हैं उसके अवगुण हमारे खाते में जमा हो जाते हैं और हमारे अच्छे गुण उसके खाते में जमा हो जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, "निन्दा करने वाला अपना छोटा होने का सामान बनाता है। हमें भूल से भी किसी की निन्दा नहीं करनी चाहिए। हमें अपने मन की निन्दा करनी चाहिए। **दुश्मन मन** हमें अपने गुरुदेव से मिलने नहीं देता भक्ति नहीं करने देता।"

हमें किसी से ईष्या नहीं करनी चाहिए जिनके अंदर ईष्या, द्वेष या अहंकार है वे परमात्मा से बहुत दूर होते हैं। मालिक के प्यारे एक जगह बैठकर भक्ति कर लेते हैं। ज्यादा पढ़कर हमें बहस करने की आदत पड़ जाती है, आप पढ़ें लेकिन सोच विचारकर पढ़ें।

पढ़या शांत न आवई पूछो ज्ञानियां जाई।

परमात्मा की भक्ति, परमात्मा के साथ मिलाप मन–बुद्धि से नहीं हो सकता ये दोनों अज्ञानी हैं। परमात्मा की भक्ति तो वहाँ से शुरू होती है जहाँ मन–बुद्धि खत्म हो जाती है। आप किसी पढ़े–लिखे से पूछ सकते हैं क्या आपको परमात्मा मिला, आपको शान्ति आई?

पढ़या ईलम अमल न कीता पढ़या फेर पढ़ाया की।
आदत खोटी न गँवाई मत्था फेर घिसाया की।।

हमें पढ़ने–पढ़ाने का क्या फायदा अगर हम पढ़कर भी उसे समझ नहीं रहे बुरी आदत को नहीं छोड़ रहे। महात्मा प्यार से कहते हैं हम बानी को प्रेम–प्यार से पढ़ें कि महात्मा ने ग्रंथो के अंदर कितना अच्छा उपदेश दिया है कि शराब पीना बुरा है किसी की निन्दा करनी बुरी है। सब समाज परमात्मा ने बनाए हैं। हमें चाहिए कि हम महात्मा की बानी को अच्छी तरह विचारें। हम सब परमात्मा के बच्चे हैं, हम सब परमात्मा की भक्ति करें।

मिल सत संगत नाम सलाहो आतम राम सखाई हे।।
छोडो काम क्रोध बुरयाई।। हौमैं धंध छोडो लंपटाई।।

आप कहते हैं आत्मा को जब भी शान्ति आएगी अपने घर पहुँचकर ही आएगी। निन्दा करना छोड़ दें। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हमारे जानी दुश्मन हैं, इन्हें छोड़ दें तो अपने आप ही शान्ति आ जाएगी लेकिन हम इनको मित्र बनाकर बैठे हैं। हमने इन्हें अपने घर में जगह दी हुई है तो हमें कैसे शान्ति आ सकती है? जब काम का वेग उठता है तो पास खड़ा आदमी भी नजर नहीं आता और इंसान से जानवरों वाले काम करवा लेता है। यही हालत क्रोध की है भाई, भाई का सिर गाजर मूली की तरह काट देता है। एक कौम दूसरी कौम को तबाह करने पर तुली हुई है। यह तत्काल का पागलपन है। क्या क्रोधी को शान्ति आ सकती है?

कबीर साहब कहते हैं, "कामी, क्रोधी, लालची भक्ति नहीं कर सकते। काम से आत्मा नीचे आ जाती है और क्रोध से फैल जाती है। क्रोधी का खून जल जाता है अगर आप शान्ति लेना चाहते हैं परमात्मा से मिलना चाहते हैं तो काम, क्रोध को छोड़ दें।"

सतगुरु सरण परो ता उबरो इयों तरीऐ भवजल भाई है।।

आप कहते हैं कि काम, क्रोध छोड़कर पूरे गुरु की शरण में चले जाएं। आप संसार समुंद्र से पार हो जाएंगे आपको शान्ति आ जाएगी। शान्ति जब भी आएगी सतगुरु की शरण में जाकर ही आएगी।

मैं बताया करता हूँ कि हम सब अपने–अपने तरीके से गुरुमत करते हैं लेकिन गुरुमत कहाँ से शुरू होता है? पहले हमारी आत्मा पर स्थूल पर्दा है उसके अंदर सूक्ष्म फिर कारण पर्दा है। जब हम तीनों पर्दे उतारकर दसवें द्वार में पहुँच जाते हैं फिर वहाँ जाकर गुरुमत की अलिफ बे शुरू होती है। जब हम चौथी अवस्था में जाते हैं वहाँ दसवें द्वार के रास्ते में बड़ा भूलभुल्लेया का देश आता है जिसे तिमिर खंड कहकर बयान किया गया है। कबीर साहब कहते हैं:

महासिंध बिखमी घाटी, बिन सतगुरु पावे नही वाटी।।

हमारे हिन्दु शास्त्रों में लिखा है कि गुरु अंधेरे में प्रकाश करता है। आत्मा महासुन्न में धक्के खाती फिरती है। वहाँ से पूरा गुरु अपने प्रकाश के जरिए ही आत्मा को आगे लेकर जा सकता है। वहाँ जाकर पता लगता है कि कौन पूरा गुरु है, क्या हम गुरुमत पर चलते हैं या हम गुरुमत से हजारों मील दूर बैठे हैं? आप सतगुरु की शरण में जाएं तभी आपका उद्धार होगा। गुरु जो कहता है आप वह करें।

आगै बिमल नदी अगन बिख झेला।। तित्थै अवर न कोई जीउ इकेला।।

हमने जिस्म यहीं छोड़ जाना है। हम जिन्हें बहन भाई बनाकर बैठे हैं किसी ने हमारी मदद नहीं करनी, ये हमारा साथ छोड़ देंगे या हम इनका साथ छोड़कर चले जाएंगे। आगे जिस नदी का जिक्र किया है इसका हिन्दु शास्त्रों में भी जिक्र आता है इसे आग की नदी कहते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, "काल ने अंदर ऐसे खम्बे तपाए हुए हैं अगर एक भी खम्बा इस दुनिया में आ जाए तो यह दुनिया जल जाए। जिनका चरित्र अच्छा नहीं होता ऐसी मलीन आत्माओं को इन खम्बो के साथ चिपटाया जाता है। वह आग की नदी सबको पार करनी पड़ती है अगर गुरु है तो सतसंगी का रास्ता ही और है। गुरु अपने शिष्य को इस रास्ते से कभी नहीं भेजता।"

भड़ भड़ अगन सागर दे लहरी पड़ दझेंह् मनमुखताई हे।।

सन्त–महात्मा जब बानी लिखते हैं तो किसी का दिल नहीं दुखाते। किसी की निन्दा नहीं करते लेकिन सच तो बताना ही पड़ता है। जैसे समुंद्र के अंदर सारा दिन लहरें उठती है उस नदी में भी आग की लहरें उठती रहती है। वहाँ जाकर पता लगता है कि हम पढ़–पढ़ाई से पार होते हैं या गुरु पार करवाता है। कोई पूरा गुरु ही उन लहरों से बचाकर ले जाए तो ले जाए नहीं तो हम जा ही नहीं सकते। वहाँ पता लगता है कौन पूरा गुरु है?

मैं बताया करता हूँ, "किसी भी सन्त की शरण में जाने से पहले उसकी जिंदगी पढ़कर देखें! क्या उसने 10–20 साल परमात्मा की भक्ति की है, कोई कुर्बानी की है? जिसने कुर्बानी की है वह दूसरो से भी कुर्बानी करवा सकता है; दूसरो को उपदेश दे सकता हैं लेकिन हमारी यह हालत है:"

अवरो को उपदेश दे मुख में पड़हे रेत।
रास बिरानी राख ते खाया घर का खेत।।

खुद तो कभी भजन–अभ्यास नहीं किया, कभी कोई कुर्बानी नहीं की, कभी सुरत पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर नहीं गई। लोगों को

उपदेश देते हैं कि कमाई करें। हमें पता ही है कि सतगुरु अंदर बैठा है वह कभी किसी से धोखा नहीं खा सकता।

राम झरोखे बैठकर सबका झारा ले।
जांकी जैसी चाकरी ताँको तैसा दे।।

वंशावली गुरुओं से कभी भी यह काम नहीं हो सकता। कोई कमाई वाला महात्मा ही हमें आगे लेकर जा सकता है।

गुर पह मुकत दान दे भाणै।। जिन पाया सोई बिध जाणै।।

परमात्मा ने मुक्ति सन्तों के हाथ में रखी है। सन्त जिसे चाहे शब्द का दान दें क्योंकि सन्त शब्द की कोई कीमत नहीं रखते। जैसे परमात्मा अपनी रोशनी, पानी, हवा हर एक को मुफ्त देता है इसी तरह महात्मा भी इस संसार में अपनी दात मुफ्त लुटाते हैं। मुक्ति का दरवाजा सन्तों के हाथ में हैं उनके अंदर दया होती है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, "सवाल तो लेने वाले का है वह तो सच्चखंड से आपको देने के लिए आ गया है। परमात्मा देते हुए नहीं थकता, हम लेते-लेते थक जाते हैं।"

जिन पाया तिन पूछो भाई सुख सतगुर सेव कमाई हे।

जिन्होंने सतगुरु की सेवा की भजन-अभ्यास किया, सतगुरु के हुक्म को माना आप उनसे जाकर पूछें कि सतगुरु की सेवा कैसे की जाती है? गुरु का सेवक जीते जी मर जाता है और मरकर फिर जी पड़ता है क्योंकि वह शब्द में ही जीता है और शब्द में ही मरता है।

आखिर में गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि परमात्मा को किसी ने भी बातें करके नहीं पाया अगर यह बातों का मजबून होता तो हम सब बातों से परमात्मा को पा लेते।

09.01.1984

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमीः- *सन्त जी! मैं जब भजन पर बैठता हूँ और आँखें बन्द करता हूँ तो मेरा ध्यान दोनों आँखों के बीच चला जाता है लेकिन मुझे आँखों की दिशा का भी ख्याल रहता है और मुझे महसूस होता है कि मैं नीचे की ओर देख रहा हूँ जिससे मुझे ध्यान टिकाने में दिक्कत होती है। क्या आप मुझे बताएँगे कि मैं किस तरह अपना ध्यान ऊपर की ओर ले जा सकता हूँ?*

बाबा जीः- मैं अक्सर प्रेमियों को यह सलाह दिया करता हूँ कि आप लोग सन्तबानी मैगजीन पर ध्यान दें। मैगजीन में ऐसे बहुत से सवालों के जवाब हैं अगर आप मैगजीन को ध्यान से पढ़ें तो उसमें आपको ऐसे कई सवालों के जवाब मिल सकते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि जब हम भजन पर बैठते हैं तो हमारा शरीर, मन, सुरत और निरत स्थिर होने चाहिए। जब हमारा शरीर स्थिर होगा तो यह मन को स्थिर करने में मदद करेगा। जब हमारा मन और शरीर स्थिर होगा तो यह सुरत और निरत को स्थिर करने में मदद करेगा।

सुरत सुनने का और निरत देखने का काम करती है। जब हम भजन पर बैठते हैं तब हमें शरीर, मन, सुरत व निरत को स्थिर रखना चाहिए। इस बारे में मैं उदाहरण दिया करता हूँ कि हमें आर्मी में सिखाया जाता था कि बंदूक किस तरह चलानी है? हमें गोली को सही निशाने पर लगाने के लिए शरीर, बंदूक और निशाने को एक लाइन में रखना पड़ता था अगर ये चीजें एक

लाइन में न हों या हिल रही हो तो हम ठीक निशाना नहीं लगा सकते। सन्तमत में भी यही सिद्धांत लागू होता है अगर आप सही तरीके से अभ्यास करना चाहते हैं तो आपका शरीर और मन शान्त होना चाहिए। आपका ध्यान दोनों आँखों के बीच थोड़ा-सा ऊपर होना चाहिए, आपको बाहर की बजाए अंदर देखना चाहिए।

नामदान के समय प्रेमियों को बताया जाता है कि जब आप अभ्यास में बैठते हैं तो किसी शक्ल को याद करने की जरूरत नहीं। आपको सिर्फ आँखें बंद करनी है आपको जो अंदर दिखाई देगा वही तीसरी आँख है। आपको तीसरी आँख ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है। जब आप बाहरी आँखों को बंद करते हैं तो तीसरी आँख अपना कार्य करना शुरू कर देती है।

मैं प्रेमियों को सलाह दिया करता हूँ कि आप जब भजन पर बैठते हैं तो आपको कोई चीज देखने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। आपको सिर्फ तीसरे तिल पर ही ध्यान देना चाहिए और 'पाँच शब्द' का सिमरन करना चाहिए। प्रेमियों को यह नहीं पता कि उन्हें ध्यान कहाँ टिकाना चाहिए। वे कभी ऊपर, कभी नीचे, कभी दाएँ और कभी बाएँ देखने लग जाते हैं क्योंकि उन्होंने अपने ख्यालों को इकट्ठा नहीं किया होता, उनके ख्याल बिखरे रहते हैं। वे पूरा समय ध्यान टिकाने के लिए संघर्ष करते रहते हैं।

एक प्रेमीः- *सन्त जी! मन को काबू करने के लिए सिमरन करना होता है लेकिन हमें सिमरन याद करवाने के लिए मन पर भी भरोसा करना पड़ता है। यह तो इस तरह है कि अनाज की रखवाली के लिए कौवों को बिठा दें?*

बाबा जीः- नामदान के समय आपको बताया जाता है कि जब सेवक को नामदान दिया जाता है तो गुरु सेवक के अंदर शब्द रूप

होकर बैठ जाता है। जब आप सिमरन करें तो गुरु का सहारा लें। आपको सिमरन करने के लिए मन की बजाए गुरु का सहारा लेने की इच्छा रखनी चाहिए।

एक प्रेमीः- *सन्त जी! कृपया आप हमें एक कहानी सुनाएँगे?*

बाबा जीः- जब हम भजन-अभ्यास की बात करते हैं तब हमें भजन-अभ्यास की कहानियाँ ही अच्छी लगती हैं। अगर कोई सवाल ही ऐसा हो तो अपने आप ही कहानी आ जाती है और वह तभी अच्छी लगती है वैसे कहानी सुनाना अच्छा नहीं लगता।

एक प्रेमीः- *सन्त जी! मैं अंदर अनेक प्रकार की धुनें और आवाजें सुनता हूँ जो कभी ऊँची और कभी नीची होती हैं। मुझे समझ नहीं आता कि मैं ऊँची आवाजों का ध्यान करूं या नीची आवाज़ों का ध्यान करूँ? क्या ऊँची आवाजों में कोई अंतर होता है या मैं आवाज़ सुनकर ही खुश रहूँ?*

बाबा जीः- इसलिए मैं हमेशा प्रेमियों को सन्तबानी मैगजीन पढ़ने के लिए कहता हूँ क्योंकि इस किस्म के सवालों के जवाब मैगजीन में छप चुके हैं। मैं अक्सर बताया करता हूँ कि पानी जब पहाड़ से नीचे आता है तो पानी की आवाज़ एक तरह की होती है वही पानी जब पत्थरों में से गुजरता है तो उसकी आवाज दूसरी तरह की होती है, वही पानी जब रेत पर बहता है तो इसकी और तरह की आवाज़ होती है आखिरकार जब यह पानी समुद्र में गिरता है तो इसकी अलग आवाज़ होती है। पानी वही था आवाज़ बदल गई क्योंकि पानी अलग-अलग स्थानों से गुजरा। सच्चखण्ड से एक ही आवाज़ आती है लेकिन यह आवाज पाँच अलग-अलग तरह के स्थानों से गुजरती है।

सन्तों ने इसे पाँच अलग तरह के शब्द कहे हैं, पाँच स्थानों से गुजरने से पाँच अलग तरह की आवाज़ें सुनाई पड़ती हैं। आपको शुरू में जो आवाज़ सुनाई दे आप उस आवाज़ को पकड़ें और उस पर ध्यान लगाएं, चाहे वह आवाज ऊँची जगह से चाहे नीची जगह से सुनाई दे। आपको एक ही धुन पकड़नी चाहिए। आप जो भी धुन सुनते हैं वह धुन सच्चखंड से आ रही है।

यह प्रेमियों के आम सवाल हैं जिनका जवाब कई बार दिया गया है इसलिए हमें सन्तबानी मैगजीन को पढ़ना चाहिए। अगर हमने पहले के अंक नहीं पढ़े तो उन्हें पढ़ना चाहिए। मुझे आपके सवालों के जवाब देने में कोई परेशानी नहीं। मैं यह नहीं कहता कि मुझसे कोई सवाल न किए जाएं अगर आप बार-बार वही सवाल पूछते हैं तो मैं कहता हूँ कि आप मैगजीन और धार्मिक किताबे पढ़ें जिनसे आपको फायदा होगा।

एक प्रेमीः- *सन्त जी! मैं जब बीमार हो जाता हूँ तो यह महसूस करता हूँ कि तब मन मुझे भजन-अभ्यास से दूर ले जाता है। जब ऐसा हो रहा हो तो मन पर काबू पाने का क्या रास्ता है?*

बाबा जीः- सुख-दुःख, गरीबी-अमीरी, बीमारी-तंदरूस्ती ये सब हमारे अपने कर्मों के मुताबिक होता है। मन हमेशा बहाने ढूंढता है ताकि हम भजन न कर सकें। अगर हम सतगुरु के साथ सच्चा प्यार रखते हैं और सतगुरु के प्रति समर्पित हैं तो चाहे हम कितने भी बीमार क्यों न हों हम भजन-अभ्यास नहीं छोड़ेंगे। अगर हम अपने अंतर में सतगुरु पर आत्मविश्वास नहीं रखते तब थोड़ी सी बीमारी में भी हमारा मन कहेगा कि हम बहुत बीमार हैं और हम अभ्यास करना छोड़ देते हैं।

***

धन्य अजायब

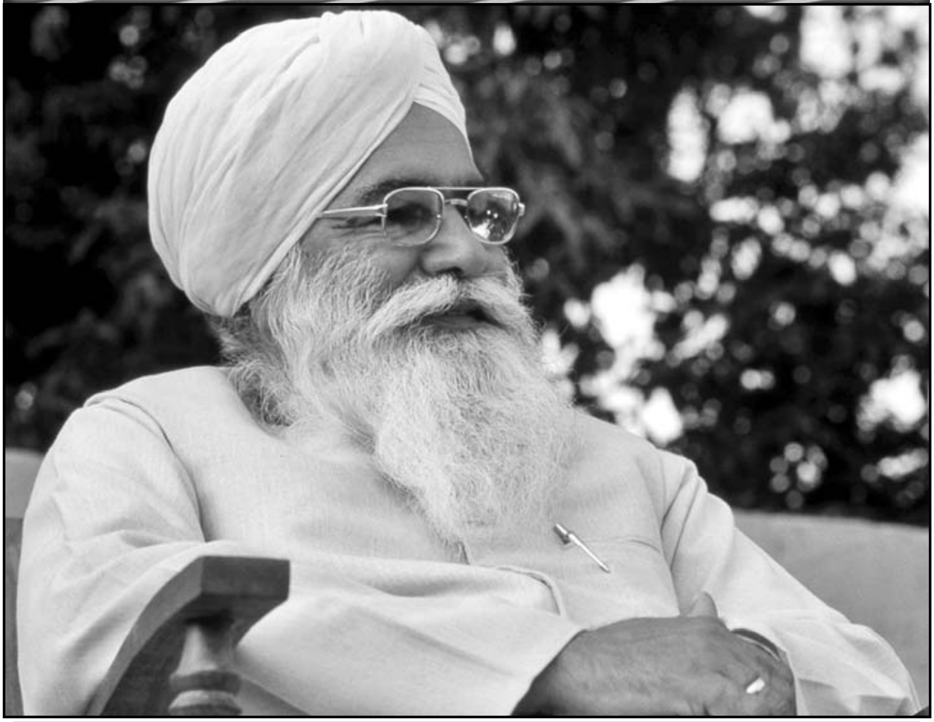

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

25 से 27 नवम्बर 2016

23 से 25 दिसम्बर 2016

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

04 से 08 जनवरी 2017

फोन 98 33 00 40 00 व 93 24 65 13 21